राज
कॉमिक्स
मूल्य 15.00 संख्या 151
नागराज और
शंकर शहंशाह
एक
पोस्टर
मुफ्त
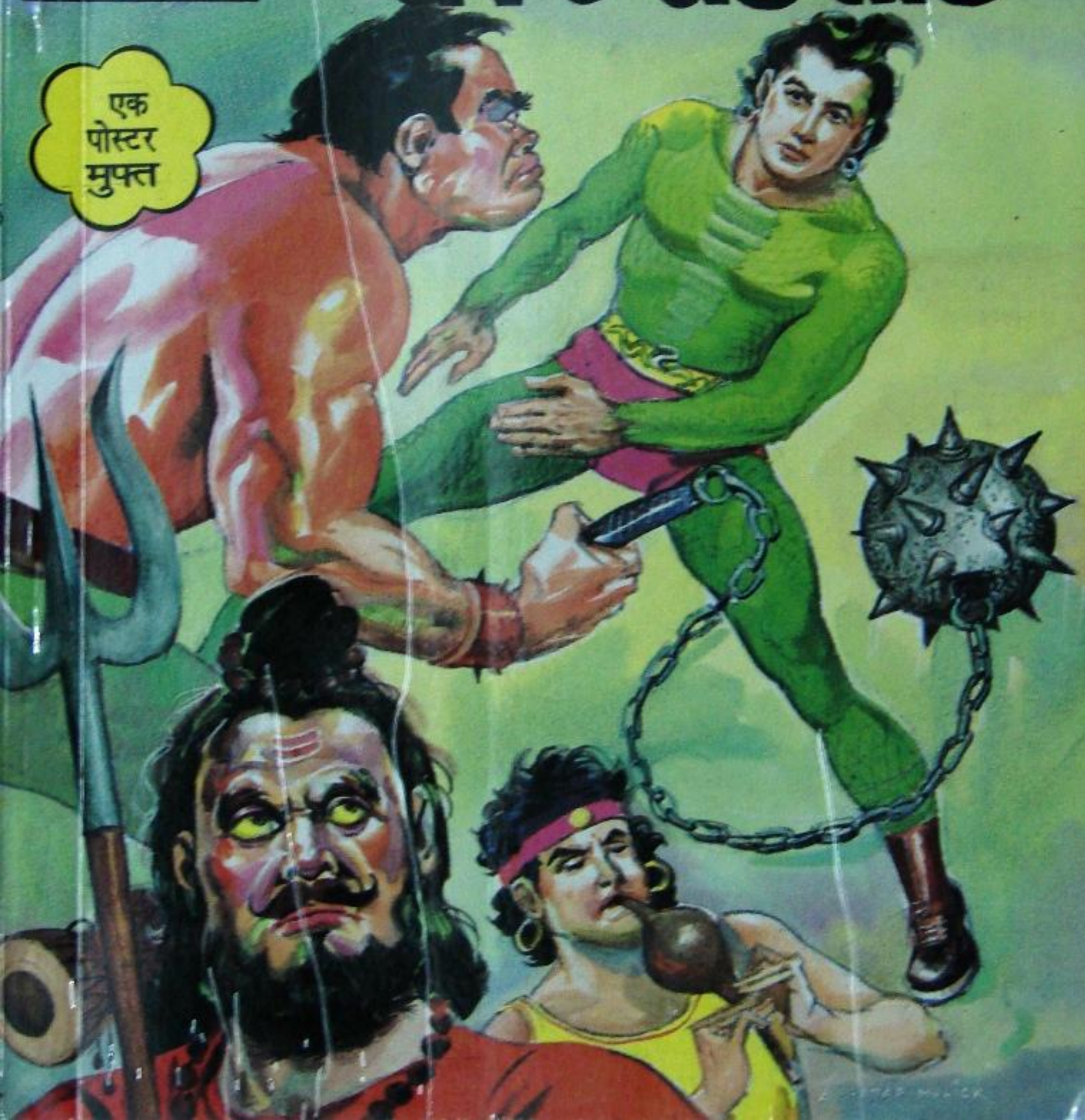
नागराज और शंकरशहंशाह

कथा: तरुणकुमार वाही
सम्पादक: मनीष चन्द्र गुप्त
कलानिर्देशक: प्रताप मुलिक
चित्रकार: चंदु
सुलेख: उदय भास्कर

...नागमणि द्वीप पर वे नागों की कुल देवी की मणि उड़ाकर भाग निकलते हैं...

टिकिट ब्लैकियों की बन आई थी—
दस वाली सौ में!
??
दस वाली सौ में!
उसी शाम बम्बई के वानखेड़े स्टेडियम में पांव रखने की भी जगह और नहीं थी—
नागराज स्वयं भी उस भीड़ में शामिल था
देखूंगा... इच्छाधारी सांप को मंच पर कैसे बुलाता है वो विषप्रिय!
शंकर शहंशाह के केबिन से अजीब सी उत्तेजना फैली थी—
बीन की तान पर जब नागराज मंच पर पहुंचेगा तो बाघ, तुम उसे बेहोश करके तुरन्त हैडक्वार्टर ले जाना...
लेकिन नागराज को बेहोश करना... यह नामुमकिन है शहंशाह!

नहीं! बीन की तान पर उसके जिस्म से सभी सांप निकलकर विषप्रिय के गुलाम बन जाएंगे, तब नागराज एक साधारण मानव के समान होगा!...

... तुम उसे आसानी से काबू कर लोगे। समझे।
आप ग्रेट हैं, शंकर शहंशाह!

फिर हैडक्वार्टर पर डाक्टर ब्रेनो तीन दिन में ही उसका ब्रेन वाश करके नागराज को हमारा गुलाम बना देगा। हा हा हा...
??

... और अब इन्तजार की घड़ियां समाप्त हुईं। दुनिया का सबसे हैरत अंगेज कारनामा पेश करने के लिए विषप्रिय...

... आपके सामने हैं!
विषप्रिय ऽऽ विषप्रिय ऽऽ
हेऽऽऽ
तालियां

जाओ बॉब! शो शुरू हो रहा है!
यस शहंशाह!

बीन की धुन पर थिरकता हुआ नागराज मंच पर जा पहुंचा–

??

यह कौन है?

यह धुन मुझे मदहोश कर रही है।

पीं ई SSS

इच्छाधारी सांप?

!!

अरे! यह सांप जैसा व्यक्ति कौन है?

और शीघ्र ही नागराज बेहोश हो गया

पीं ई ऽऽऽ

इसे उठाकर तुरन्त यहां से ले चलूं।

उधर शंकर शहंशाह के हैडक्वार्टर में —
हूंम्म!
इसे होश आ रहा है शहंशाह!
आ... ह!

नागराज उठ बैठा —
य... यह मैं कहां आ पहुंचा हूं?
शंकर शहंशाह की जेल में नागराज!

ये हैं जुर्म की दुनिया के बेताज बादशाह शंकर शहंशाह जिनके सामने अब तुम भी सिर झुकाओगे नागराज!
ओह!

नागराज ईश्वर के अलावा केवल महात्मा गोरखनाथ के सामने सिर झुकाता है, मिस्टर गुमनाम!

शंकर शहंशाह के सामने न झुकने वाले सिरों को तोड़ दिया जाता है नागराज! हा हा हा। जरा पलटकर पीछे भी देख लो। हा हा हा हा।
??

नागराज तुरन्त प्रगट हुआ—
यह रीछ है नागराज! आज हम इससे तुम्हारी कुश्ती देखना चाहते हैं।
ओह!

रीछ नाम के उस पहलवान ने हाथ से पकड़ी मोटी लोहे की रॉड को तिनके के समान मोड़ दिया—
हा हा हा
कड़ड़ड

वह नागराज की ओर बढ़ा—
ऐसे कितने रीछों से मेरा पाला पड़ चुका है।
या ऽऽऽ

आओ प्यारे रीछ! तुमसे भी मुक्काबात किये लेते हैं।

रीछ नागराज पर झपटा—
या ऽऽ
ओह!

नागराज ने फ्लाइंग किक रीछ की छाती पर जड़ दी—
हा हा हा
तड़ाक

किक का असर न होते देख नागराज ने टांगों की कैंची बनाकर उसके गले में डाल दी—
हा हा हा
उफ! काफी ताकतवर है!

नागराज उछलकर वापिस जमीन पर पहुंच गया—
इस पर स्नेक हैण्ड का इस्तेमाल करना चाहिए!

नागराज ने स्नेक-हैण्ड का इस्तेमाल किया—
याऽऽऽ ई

नागराज ने एक साथ कई वार रीछ पर किए—
कड़ाक
तड़ाक
कराट

हा हा हा हा क्यों नागराज, किसी ने से लड़ाए तुम्हें?
??

उफ! आखिर यह मुझे हो क्या गया है?

रीछ ने आगे बढ़कर एक जबरदस्त घूंसा उसके सीने पर दे मारा—
ओह... आह!

उसके फर्श पर गिरने से पूर्व ही रीछ ने एक ठोकर पसलियों में जड़ दी—
याऽऽऽ
आऽऽह

नागराज ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति जुटाकर रीछ पर छलांग लगाई लेकिन—
ओह!
अब तुझे राकेट बनाऊंगा नागराज!

रीछ ने उसे उछाल फेंका–

हा हा हा

धड़ाक

उफ!

ऊं... ह... मेरा दम घुट रहा है।

नागराज बेहोश हो गया—
??
हा हा हा
ढुरूड

देखा तुमने बॉब! नागराज शक्तियां छिन जाने के बाद कितना पंगु हो गया है!...

...और जानते हो रीछ के साथ नागराज की जंग मैंने यही जानने के लिए करवाई थी कि अब इस नागराज में कितना दम खम है! हा हा हा हा...

...इसे डॉक्टर ब्रेनो की प्रयोगशाला में पहुंचा दो रीछ!
जो हुक्म, शहंशाह!

इधर क्रोधित विषप्रिय स्वामी शंकर शहंशाह के पास पहुंचा—
तुमने मेरा गलत उपयोग किया है शंकर शहंशाह! मेरे साथ धोखा किया है!...

...तुमने मुझे नागराज के विषय में पहले नहीं बताया अन्यथा मैं हर्गिज यह सो...
मणि प्राप्त करने के लिए तुम्हें वह कीमत मुझे देनी ही पड़ती, जो मैं गोवा व टॉम को दे चुका था। और कीमत चुकाने का तुम्हारे पास यही रास्ता था, वह स्नेक्स

मैं तुम जैसे धोखेबाज आदमी के साथ एक पल नहीं रहना चाहता मेरी मणि मुझे वापस दे दो शंकर शहंशाह।

सुनते ही शंकर शहंशाह अट्टहास लगाकर कह उठा—
अभी तुम कहीं नहीं जाओगे। नागराज के ब्रेनवाश के बाद तुम उसे उसकी सर्प शक्तियां लौटाओगे!...
??

...नागराज को मैं एक बार फिर समाज का दुश्मन बनाकर जुर्म की दुनिया में उसकी ऊंची से ऊंची बोली लगाना चाहता हूं। हा हा हा हा...
KEERTHNA

...और अगर तुमने शक्तियां लौटाने से इनकार किया तो यह मणि मैं तुम्हें हरगिज नहीं दूंगा। और तुम्हारी लाश भी किसी चौराहे पर लटकी नजर आएगी। हाहाहा!
हाहाहा
कहने के साथ ही स्वामी शंकर शहंशाह ने डमरू बजाया—
डुगडुग

डमरू का संकेत सुनकर कुछ शिष्य वहां पहुंच गए। शंकर शहंशाह ने आदेश दिया—
विषप्रिय को बाअदब हमारे मेहमान घर में रखा जाए
चलो!

चलो भीतर...
उफ!

विषप्रिय का मस्तिष्क तेजी के साथ चलने लगा—
यह अच्छा नहीं हुआ। मुझे नागराज को स्वामी शंकर शहंशाह के चंगुल से बचाना होगा।

लेकिन मैं नागराज तक कैसे पहुंचूंगा?

हुम्म एक उपाय है।

अगले ही पल उसका रूप तेजी के साथ बदलता चला गया—

अपनी इच्छाधारी शक्ति से वह शंकर शहंशाह बन गया—
??
तड़ड़
??

स... स्वामी शंकर शहंशाह!
स्वामी, आप यहां... और वह सपेरा...
वह सांप बनकर फरार हो गया है मूर्ख। दरवाजा खोलो।

ख... खोलता हूं स्वामी शहंशाह!

बाहर निकलते ही विषप्रिय दोनों पर बिजली की तरह टूट पड़ा—
आह!
धड़ाक
तड़ाक

शीघ्र ही -
जल्दी बताओ नागराज कहां है, वरना अभी गर्दन तोड़ दूंगा
आफ्
उंह

उनसे नागराज का पता लेकर -
धड़ाक
आ...ह
उफ

अब जल्दी से मुझे नागराज के पास पहुंचना होगा।

वह रहा नागराज।
??

वह तुरन्त सांप में परिवर्तित होकर ...
?
... भीतर आ गया।

और वापिस अपने असली रूप में आ गया -
??

ओह! विषप्रिय
मैं स्वयं तुमसे मिलना चाहता था... नागराज की सर्पशक्तियां छीन लेने वाला इंसान साधारण नहीं हो सकता। बताओ, तुम कौन हो?
तुमने ठीक पहचाना नागराज, मैं एक इच्छाधारी सांप हूं। नागमणि द्वीप का वासी।
और वह अपना परिचय देने लगा-

लेकिन तुम यहां बम्बई में स्वामी शंकर शहंशाह के हाथ कैसे लग गए?

मणि के कारण... जिसकी तलाश में मैं नागमणि द्वीप से चला..

...और एक जहाज के कप्तान की मदद से
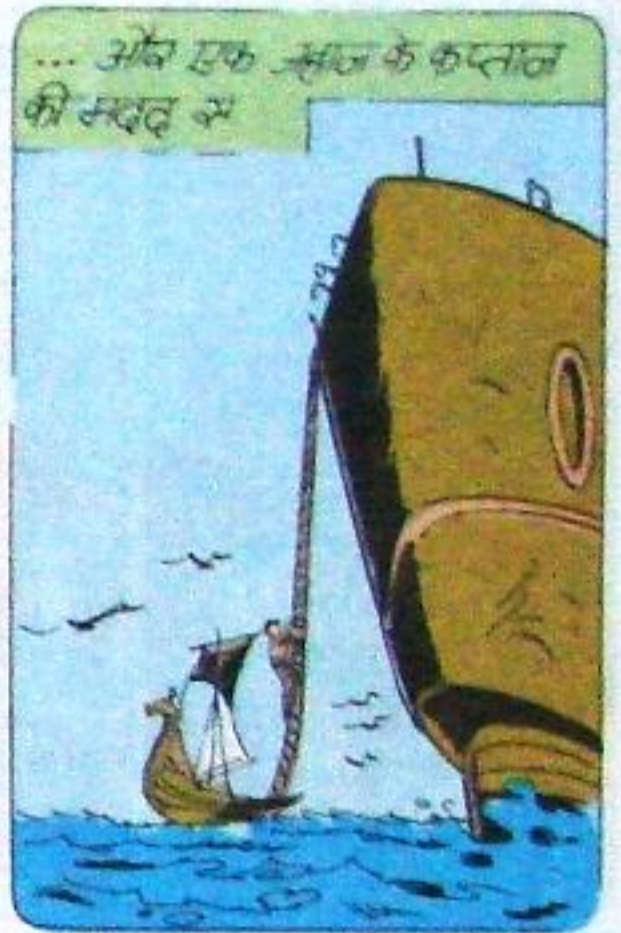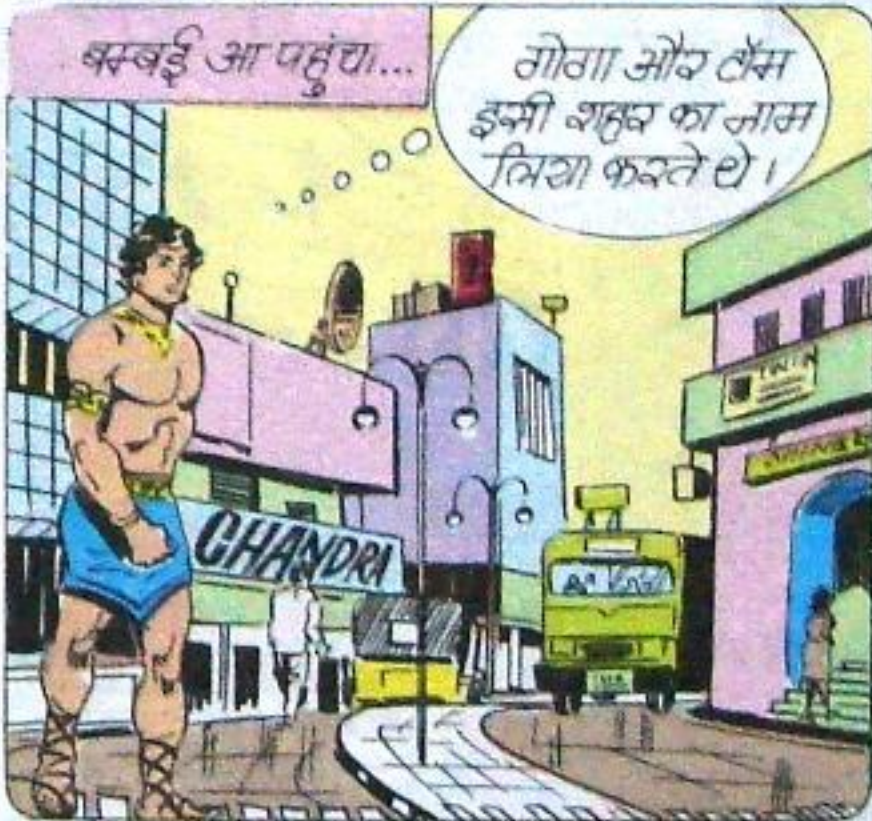
बम्बई आ पहुंचा...
गोगा और टॉम इसी शहर का नाम लिया करते थे।
CHANDRA
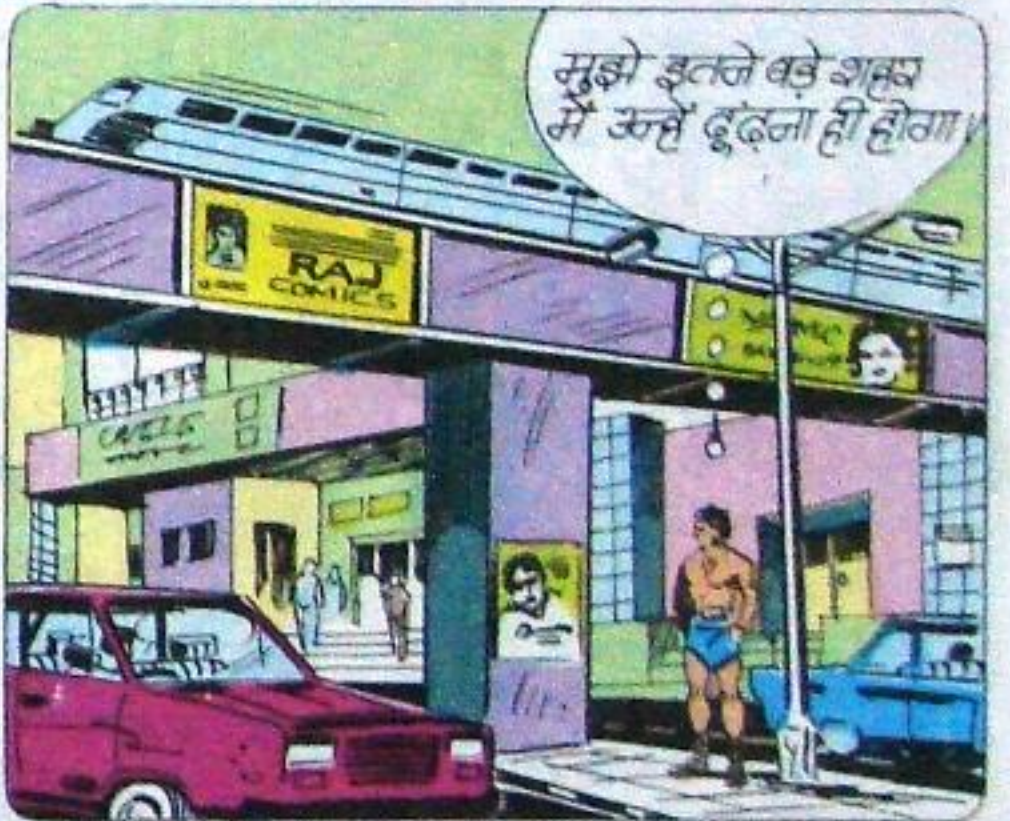
मुझे इतने बड़े शहर में उन्हें ढूंढना ही होगा।
RAJ COMICS

उफ! आज पूरे दो माह हो गए हैं, मगर उन कमीनों का कोई पता निकला...
HOTEL RINKU

...अचानक मैं चौंक पड़ा–
अरे!

उन्हें रोकना होगा!
ठ...ठहरो!

ठहरो! टॉम...गोगा... शैतानो!
??

...मुझे देखते ही टॉम व गोगा की मानो सांस ही रुक गई...
यह यहां कैसे आ पहुंचा उफ!
गोगा! विषप्रिय ...भागो!

दोनों तेजी के साथ भागे—
रुक जाओ शैतानो!
मुसीबत

अब मैं तुम्हें किसी भी कीमत पर नहीं भागने दूंगा, कुत्तो!

...टॉम बहुत तेजी के साथ सड़क पार करने लगा...
BUSH

...लेकिन...
धड़ाक
आऽऽऽ

??
लेकिन गोगा वहां रुका नहीं...
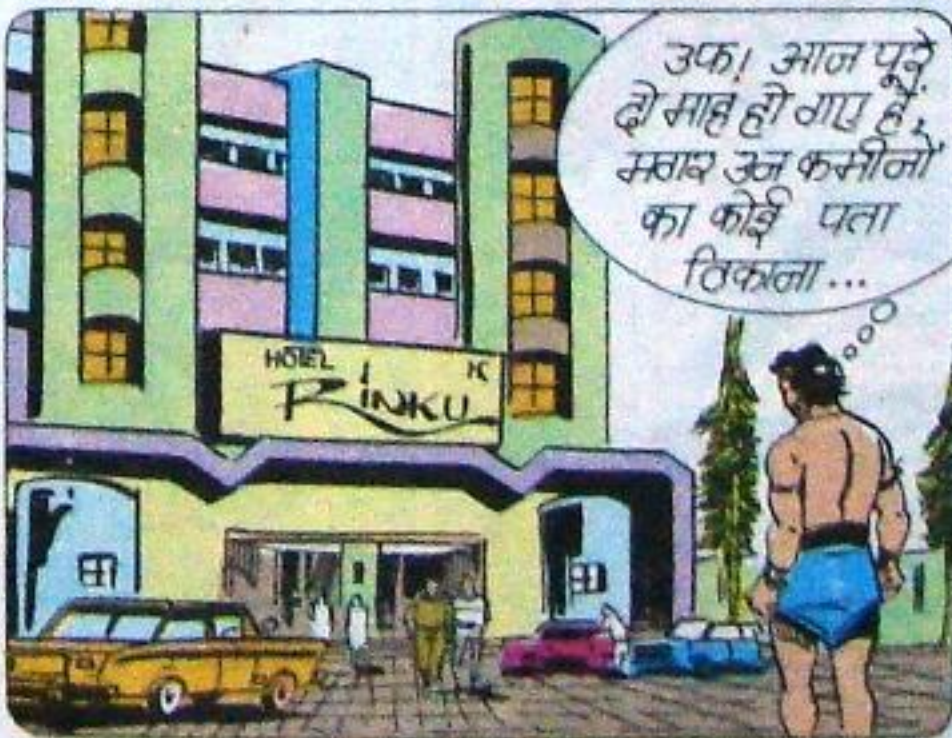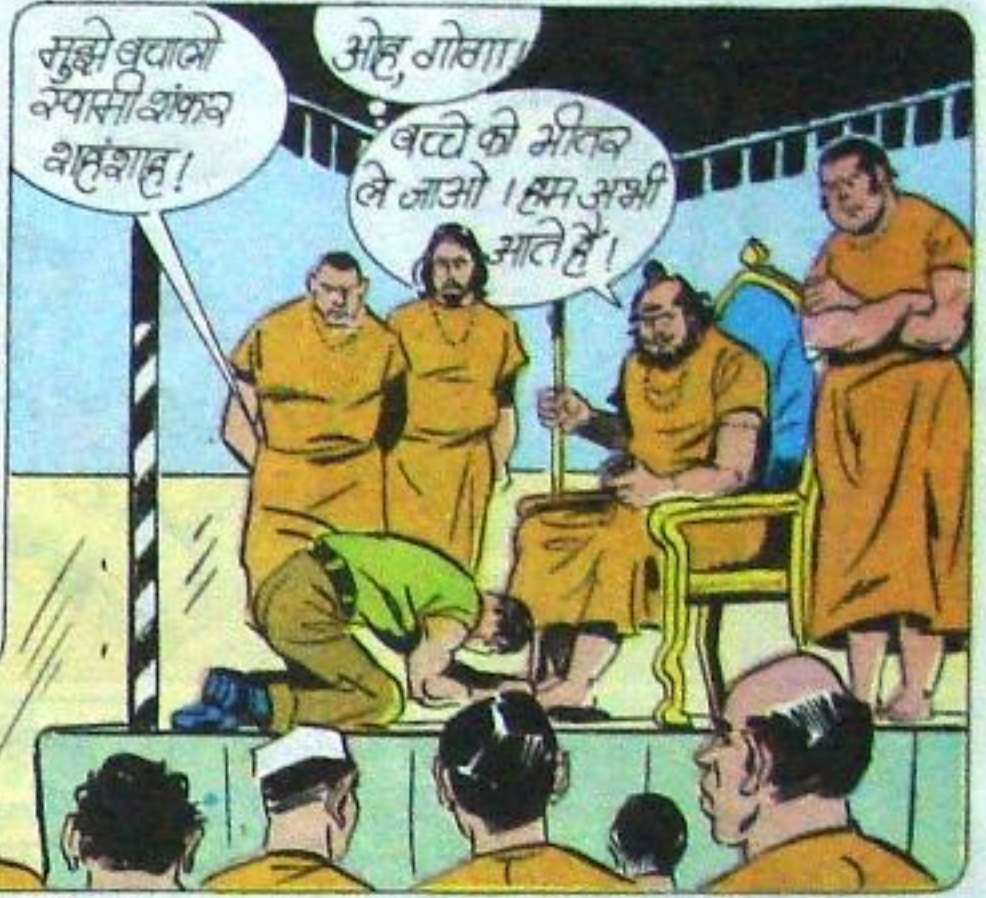
और-
ओह! वह उस आश्रम में जा रहा है।
शंकर आश्रम
मुझे बचाओ स्वामी शंकर शहंशाह!
ओह, गोगा!
बच्चे को भीतर ले जाओ! हम अभी आते हैं!

बस भक्तो। अब हम विश्राम करना चाहते हैं।
जय स्वामी शंकर शहंशाह की।
जय.. जय..

अभी स्वामी भीतर पहुंचा ही था कि तूफान की तरह से भीतर दाखिल हुआ। मुझे देखते ही गोगा पागलों के समान चीखा-
य... यही है शंकर शहंशाह जो मेरी मौत बनके मेरे पीछे पड़ा है। वह मणि जो हमने तुम्हें बेची थी...
??

... इससे पहले कि वह अपना वाक्य पूरा कर पाता...

आऽऽऽ
... मैंने अपने दांत उसकी गर्दन में गड़ा दिये...

??
आऽऽऽ इच्छाधारी सांप
!!!
??

कौन हो तुम?
मुझे वह मणि देदो, शंकर शहंशाह। मैं वह मणि लेने ही सैकड़ों मील दूर अपने द्वीप से यहां आया हूं।

यह गोगा क्या कह रहा था... इच्छाधारी सांप का क्या चक्कर है?
ओह। इसे कोई झूठी कहानी सुनानी होगी।
वह मणि हमारे देवता इच्छाधारी सांप की है...

...जिसे टॉम और गोगा चुरा लाए थे। अगर ये मणि वापिस देवता की मूर्ति पर न प्रतिष्ठित की गई तो देवता का कहर हमारे पूरे द्वीप पर टूट पड़ेगा।...

...मुझे वह मणि देदो स्वामी शंकर शहंशाह! बदले में तुम जितनी चाहोगे कीमत मैं तुम्हें दूंगा!
मगर गोगा ने तो मुझे कोई और ही कहानी सुनाई थी...

...कि उन्होंने मणि को एक सपेरे से हासिल किया था।
मैं ही वह सपेरा हूं।

तुम सपेरे हो?
हां!

...स्वामीजी ने डमरू बजाया...
डुरूड़

डमरू की आवाज सुनकर एक शिष्य बाहर निकल गया...

कुछ ही देर बाद–
ये बीन बजाकर दिखाओ।
ओह!

अगर ये सपेरा है तो बीन अवश्य बजा लेगा।

मैंने बीन बजानी आरम्भ की–
पीं ईं ऽऽऽऽ

पीं ईं ऽऽऽ

पीं ईं ऽऽऽऽ
बापरे! सांप!
सा... सांप

ब... बन्द करो। बीन बजानी बन्द करो।
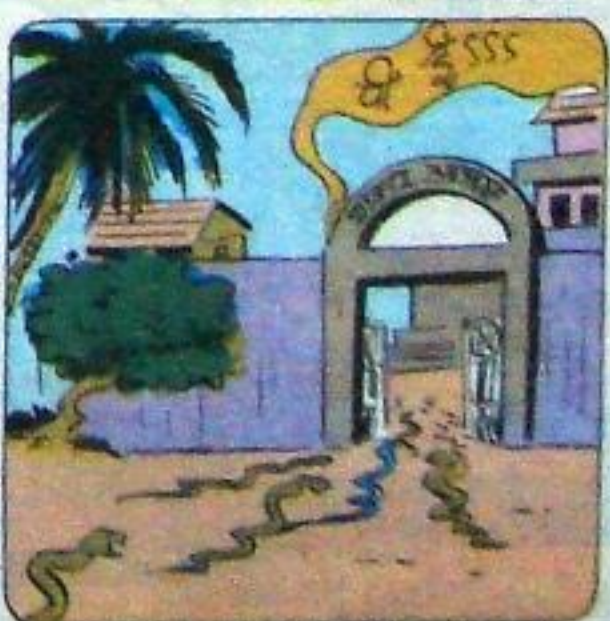
...मैंने तुरन्त बीन बजानी बन्द कर दी। सांप धीरे-धीरे कमरे से बाहर निकल गए तब...
अद्भुत कमाल का फन है तुम्हारे अन्दर
अब तो तुम्हें यकीन आ गया कि मैं ही वो सपेरा हूं।
जान बची!

और अचानक कुछ सोचते-सोचते स्वामी शंकर शहंशाह की आंखें चमक उठीं—
अगर एक स्नेक-शो हो और उसमें ये बीन बजाकर दूसरे सांपों के साथ नागराज को ...वाह!

उसने डमरू बजाया—
डुक्क
बॉब आपका संकेत समझ गया शंकर शहंशाह।
??

सुनो विषप्रिय। अगर तुम मणि वापिस पाना चाहते हो तो तुम्हें हमारा आदेश मानना होगा।
मानूंगा, कहकर देखो।

... और बस नागराज! लेकिन मैं नहीं जानता था कि इस शो के पीछे उनका क्या मकसद है। मैं तो स्टेज पर तुम्हें देखकर उछल ही पड़ा था।

ओह!

... अकेले फ्रांस के माफिया ने ही मेरे सिर की कीमत दो करोड़ रुपए रखी है।

?

तुम कौन हो नागराज! और ये लोग तुम्हारे पीछे क्यों पड़े हैं?

नागराज के पीछे जुर्म की पूरी दुनिया पड़ी हुई है विषप्रिय...
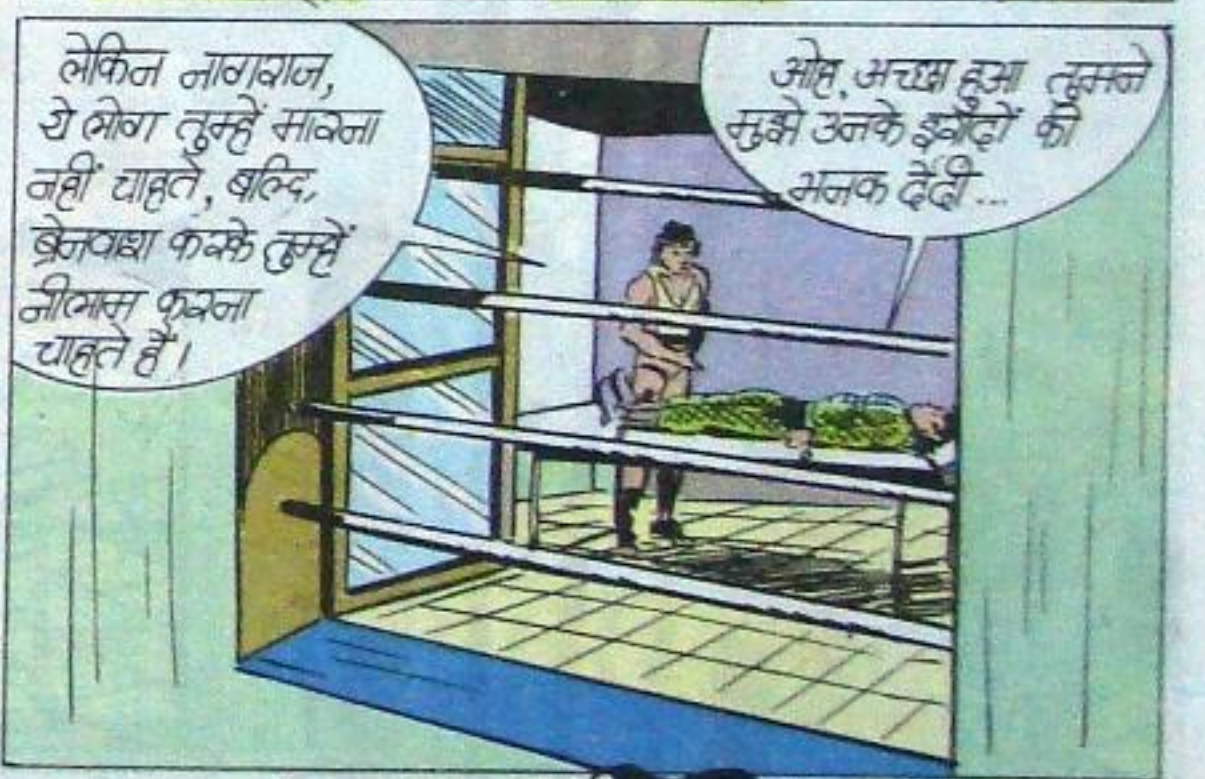
लेकिन नागराज, ये लोग तुम्हें मारना नहीं चाहते, बल्कि, ब्रेनवाश करके तुम्हें गुलाम बनाना चाहते हैं।

ओह, अच्छा हुआ तुमने मुझे उनके इरादों की भनक देदी...

... और अब मैं तुम्हें बता दूं विषप्रिय कि मैं यहां बम्बई क्यों आया हूं...

... स्वामी के रूप में शैतान इस शंकर शहंशाह के मादक पदार्थ रैकेट का सफाया करने। पूरी बम्बई में फैले इस धूर्त के अलावा वस्त्रधारी एजेंट डमरूओं से चरस, अफीम, गांजा सप्लाई करके युवा पीढ़ी को खोखला कर रहे हैं।...
... यहां बम्बई आया तो मैं उसे अपने जाल में फंसाने था, लेकिन उलटा उसी के जाल में मैं फंस गया...
... विषप्रिय, अब मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है। मुझे मेरी शक्तियां लौटा दो, डाक्टर बेनो के आने से पहले।...
... मैं तुम्हें तुम्हारी मणि भी वापिस दिलाऊंगा!
मैं कुछ ही देर में तुम्हें तुम्हारी सर्प शक्तियां लौटा सकता हूं।...
... मेरा इन्तजार करना, नागराज! मैं बीन लेकर अभी आता हूं।
BAR

विषप्रिय को गए कुछ ही देर बीती होगी कि–
तैयार हो जाओ नागराज! डॉक्टर ब्रेनो तुम्हारा ब्रेनवाश करने की ख्वाहिश रखते हैं।
ब्रेनवाश तो मैं करूंगा तुम्हारा। कुछ देर रुको।
हैलो!

डाक्टर ब्रेनो अपनी तैयारी में जुट गया–
विषप्रिय को आने में देर न हो जाए!

अब कुछ ही दिनों में तुम हमारे गुलाम बन जाओगे नागराज! हा हा हा!

अब मैं वह बटन दबाने जा रहा हूं नागराज, जिससे तुम्हारा मस्तिष्क सुन्न हो जाएगा!
अब तक उसे आ जाना चाहिए था। उफ कहीं..

और ठीक इसी पल–
पीं ऽऽऽ ईं

बीन की ध्वनि सुनते ही शंकर शहंशाह उछल पड़ा–
उफ! य... यह बीन...
??
ठीक समय पर पहुंचे विषप्रिय!

इसका मतलब विषप्रिय आजाद हो चुका है और अब वह कहीं नागराज की सर्प शक्तियां वक्त से पहले ही ... नहीं-नहीं, यह नहीं हो सकता!
पीं ऽऽ ईं ईं ऽऽ

गुस्से से उबलता शंकर शहंशाह बाहर भागा—
मैं तुम्हें जिन्दा नहीं छोडूंगा विषप्रिय, धोखेबाज!
पीं ऽऽ ईं ऽऽ

आवाज उस कमरे से आ रही है। तोड़ दो दरवाजा, खत्म करदो उसे!
पीं ऽऽ ईं ऽऽ

बॉब दरवाजा तोड़ने लगा—

कुछ ही देर में दरवाजा टूट गया—

दरवाजा टूटते ही वे उछल पड़े—
पीं ऽऽ ईं ऽऽ
अरे सांप! सांप!

कमीने...

पीssईss
आ्ााह
त्रिशूल विषप्रिय की छाती में जा धंसा।

लेकिन उसने बीन बजाना बंद नहीं किया-
पीं ईssss

पीड़ा से उसका सारा चेहरा लाल हो उठा-
पीईsss

किन्तु बीन की लय न टूटी-
पी ईsss

नागराज को खत्म करदो बाबा!

उधर डाक्टर ब्रेनो प्रयोगशाला में सांप देखकर भय से कांप उठा-
अरे सांप!
ओह! मेरी सर्प शक्तियां लौट आईं!

पलक झपकते ही सभी सांप नागराज के जिस्म में समा गए-

अब नागराज पहले के समान शक्तिशाली हो चुका था. उसने अपने बंधन तोड़ डाले-
??
कड़ड़

अब मैं तुम्हारा मस्तिष्क सुन्न करूंगा, डाक्टर!
नहीं, मुझे माफ करदो नागराज!

मुझे छोड़ दो, नागराज!

नागराज ने बटन दबा दिया -
आ!!
एकाएक बीन की आवाज आनी बन्द हो गई।

नागराज बाहर निकला -
विषप्रिय?
आह

ओह विषप्रिय! यह क्या हो गया?
मेरा समय पूरा हो गया मित्र। तुमसे एक विनती है। मणि को वापिस नागमणि द्वीप पर पहुंचा देना।

तुम्हारी जान बच सकती है। मैं तुम्हें अस्पताल...
नहीं नागराज, उस कमीने शंकर शहंशाह को जीवित मत जाने दो। उसे रोको। उसे समाप्त करदो।

...जाओ नागराज ... जल्दी!
शंकर शहंशाह, मैं आ रहा हूं।

बाहर निकलते ही सीधू व बॉब ने नागराज का रास्ता रोक लिया —
अब तुम बचकर नहीं जाओगे हाहाहा
ओह, तुम ?

बॉब ने कंटीले स्टील के गोले से वार कर दिया --
सांय
ओह!

सीधू की शारीरिक शक्ति से वह परिचित था। सीधू ने जैसे ही हमला किया, नागराज ने उसे अजगर दाँप में जकड़ लिया —
आह!
और इस बार अजगर दाँप से सीधू अपनी पसलियाँ टूटने से न बचा सका।

सीधू को समाप्त कर नागराज अभी पलटा ही था कि बॉब ने पुनः वार कर दिया, लेकिन —
सांयऽऽ सर्र सर्र

नागराज ने बॉब को एक तीव्र झटका दिया —
आ...ह

???

फिर नागराज का कहर उन सब पर टूट पड़ा—
तड़ाक
सांय
आऽऽ

फड़ाक
खड़ाक

नागराज ने गोला बॉब की ओर उछाल फेंका—
सर्ररर्प
उफ!

धड़ाक
आईऽऽऽ

शंकर शहंशाह अभी इस बिल्डिंग से नहीं निकल पाया होगा!

वह रहा!
??

और फिर ठीक यमदूत की तरह नागराज उसके सामने जा खड़ा हुआ—
त...तुम!
आओ, शंकर शहंशाह! तुम्हारा ही इंतजार था।

शंकर शहंशाह वापिस उपर की ओर भागा—

सीढ़ियां चढ़ता हुआ वह छत पर पहुंच गया—
??

नागराज भी उपर आ पहुंचा—
कहां गया?

अचानक टंकी के उपर से नागराज को किसी ने धक्का दिया—
उफ!

धक्का देने के साथ ही शंकर शहंशाह ने टंकी के दूसरी ओर कूदना चाहा, लेकिन हड़बड़ाहट में उसका संतुलन बिगड़ गया—
उफ!

और—
??
आ sss बचाओ sss

नागराज को देखते ही शंकर शहंशाह गिड़गिड़ा उठा—
मुझे बचालो नागराज!
विषप्रिय की मणि लौटादो!

वह मेरे अमरू में है।
और क्या-क्या है अमरू में?

चरस, अफीम, गांजा। मुझे बचालो नागराज!
अच्छा, कोशिश करता हूं।

नागराज ने नाग रस्सी नीचे लटकाई-
इस नागरस्सी को पकड़कर ऊपर आ जाओ।
ओह!

शहंशाह ने नागरस्सी पकड़ ली-

इस प्रकार वह वापिस छत पर आ खड़ा हुआ-

अगर तुम नीचे गिर जाते तो तुम्हारी हड्डी-पसली भी नहीं मिलती।
तुम्हारा अब यही हाल होगा नागराज!

अचानक शंकर शहंशाह के हाथ नागराज को धक्का देने के लिए बढ़े-

अब तुझे नहीं छोड़ूंगा, नागराज!

लेकिन नागराज ऐन वक्त पर एक तरफ हट गया और शंकर शहंशाह अपनी ही झोंक में छत से नीचे जा गिरा-
??

बेचारा! मुझे खत्म करने का अरमान लिए ही समाप्त हो गया।

नागराज वापिस लौटा-
शंकर शहंशाह का डमरू विषप्रिया के आसपास ही गिरा होगा।

यह रहा।

नागराज ने डमरू ... खोला –

एक मणि बाहर निकल आई –
ओह ! इस मणि के लिए ही विषप्रिय अपनी जान पर खेल गया ।

मुझे यह मणि नागमणि द्वीप तक पहुंचानी होगी ।

लेकिन मैं वहां तक पहुंचूंगा कैसे ... अरे, यह नक्शा !

तुमने मेरी समस्या हल कर दी है, दोस्त विषप्रिय।
नागराज ने विधिवत उसका अंतिम संस्कार किया।

फिर ... कमिश्नर को फोन पर उसके आफिस पर छापा मारने को कहा –

और अन्त में वह नागमणि द्वीप तक जा पहुंचा –
नागमणि द्वीप के इच्छाधारी सांप आज भी विषप्रिय का इंतजार करते लगते हैं।

कहीं ये मुझ पर हमला न करें इसलिए इन्हें मणि दिखानी चाहिए।

पुजारी बाबा के नेतृत्व में सारे इच्छाधारी सांप मणि देख उछल पड़े –
इसके पास तो देवी की मणि है !
लेकिन विषप्रिय ?

नागराज किनारे पर उतर आया जहां विषप्रिय का इन्तजार करते हुए इच्छाधारी सांपों ने उसे चारों ओर से घेर लिया—
तुम कौन हो युवक? और विषप्रिय कहां है?
मेरा नाम नागराज है। यह आपकी अमानत है मेरे पास...
??

...और मुझे अफसोस है कि विषप्रिय अब इस दुनिया में नहीं है।
नहीं, भैया।

मरते समय उसने मुझ से इस मणि को इस द्वीप तक पहुंचाने का वचन लिया था...

...इसलिए मैं उसके हत्यारों को सजा देने के बाद यहां आया हूं।
तुम महान हो नागराज!

...हम चाहते हैं कि तुम स्वयं अपने हाथों से इस मणि को देवी पर स्थापित करो।

नागराज ने उनका अनुरोध

फिर जैसे ही नागराज मणि स्थापित कर नीचे उतरा कि देवी के हाथ से थमी माला उसके गले में आ पड़ी—
??
??

यह देख विसर्पी कह उठी—
नागराज! हमारी देवी का आशीर्वाद तुम्हें मिल गया। हम चाहते हैं कि अब तुम यहीं रहो।
मैं तुम्हें सौंपता हूं नागराज! आज से तुम यहां के राजा हो।
ओह!

समाप्त